|| श्री गणेशाय नमः ||

|| श्री बाबा गंगाराम देवाय नमः ||

|| श्री भक्त शिरोमणि देनकीनन्दनाय नमः ||

|| ॐ माता गायत्री देव्यै नमः ||

चालीसा एवं आरती संग्रह

विषय **पृष्ठ संख्या**

1- श्री बाबा गंगाराम चालीसा .... 2 से 4

2- श्री भक्त शिरोमणि देवकीनंदन चालीसा .... 5 से 7

3- शक्ति स्वरुपा माता गायत्री देवी चालीसा .... 8 से 10

4- आरती श्री बाबा गंगाराम की 11

5- आरती श्री भ. शि. देवकीनंदन व माता गायत्री देवी की 12

: अथ :

श्री बाबा गंगाराम चालीसा

अलख निरंजन आप हैं, निरगुण सगुण हमेस।

नाना विधि अवतार धर, हरते जगत कलेष।।

बाबा गंगारामजी , हुए विष्णु अवतार ।

चमत्कार लख आपका, गूंज उठी जयकार ।।

।।चौपाई।।

गंगाराम देव हितकारी, वैश्य वंश प्रगटे अवतारी ।।1।।

पूर्व जन्म फल अमित रहेऊ , धन्य धन्य पितु मातु भयेऊ ।।2।।

उत्तम कुल उत्तम सतसंगा, पावन नाम राम अरू गंगा ।।3।।

बाबा नाम परम हितकारी, सत सत वर्ष सुमंगलकारी ।।4।।

बीतहि जन्म देह सुधि नांहि, तपत तपत पुनि भयेऊ सुसाई ।।5।।

जो जन बाबा में चित लावा, तेहि परताप अमर पद पावा ।।6।।

नगर झुंझुनू धाम तिहारो, शरणागत के संकट टारो ।।7।।

धरम हेतु सब सुख बिसराये, दीन हीन लखि हृदय लगाये ||8||

एहि विधि चालिस वर्ष बिताये, अन्त देह तजि देव कहाये ||9||

देवलोक भई कंचन काया, तब जनहित संदेश पठाया ||10||

स्वप्न देवकीनन्दन पावा, भावी करम जतन बतलावा ||11||

आपन सुत को दर्शन दीन्हों, धरम हेतु सब कारज कीन्हों ||12||

नभ वाणी जब हुई निशा में, प्रगट भई छवि पूर्व दिशा में ||13||

ब्रम्हा विष्णु शिव सहित गणेशा ,जिमि जनहित प्रगटेउ सब ईशा ||14||

चमत्कार एहि भांति दिखावा, अन्तरध्यान भई सब माया ||15||

गायत्री संग करहिं विचारा, मन मंह गंगाराम पुकारा ||16||

जो जन करई मनौती मन में, बाबा पीर हरहिं पल छन में ||17||

ज्यों निज रूप दिखावहिं सांचा, त्यों त्यों भक्तवृन्द तेहिं जांचा ||18||

उच्च मनोरथ शुचि आचारी, राम नाम के अटल पुजारी ||19||

जो नित गंगाराम पुकारे, बाबा दुख से ताहिं उबारे ||20||

बाबा में जिन्ह चित्त लगावा, ते नर लोक सकल सुख पावा ||21||

परहित बसहिं जाहिं मन मांही, बाबा बसहिं ताहिं तन माहिं ||22||

धरहिं ध्यान रावरो मन में, सुख संतोष लहैं तन मन में ||23||

धर्म वृक्ष जेहि तन मन सींचा, पार ब्रम्ह तेहि निज में खींचा ||24||

गंगाराम नाम जो गावे, लहि बैकुण्ठ परम पद पावे ||25||

बाबा पीर हरहिं सब भांति, जो सुमिरे निश्छल दिन राती ||26||

दीन बन्धु दीनन हितकारी, हरो पाप हम शरण तिहारी ||27||

पंचदेव तुम पूर्ण प्रकाशा , सदा करो संतन मंह बासा ||28||

तारण तरण गंग का पानी, गंगाराम उभय सुनिशानी ||29||

कृपासिन्धु तुम हो सुखसागर, सफल मनोरथ करहु कृपाकर ||30||

झुंझुनूं नगर बड़ा बड़ भागी, जहं जन्में बाबा अनुरागी ||31||

पूरन ब्रम्ह सकल घटवासी, गंगाराम अमर अविनाशी ||32||

ब्रम्ह रूप देव अति भोला, कानन कुण्डल मुकुट अमोला ||33||

नित्यानन्द तेज सुख रासी, हरहुं निशातम करहुं प्रकासी ||34||

गंगादशहरा लागहि मेला, नगर झुंझुनूं मंह शुभ बेला ||35||

जो नर कीर्तन करहिं तुम्हारा, छवि निरखि मन हरष अपारा ||36||

प्रातः काल ले नाम तुम्हारा, चौरासी का हो निस्तारा ||37||

पंचदेव मन्दिर विख्याता, दरशन हित भगतन का तांता ||38||

जय श्री गंगाराम नाम की, भवतारण तरि परम धाम की ||39||

महावीर ' धर ध्यान पुनीता, विरचेउ गंगाराम सुगीता ||40||

दोहा - सुने सुनावे प्रेम से, कीर्तन भजन सुनाम |

मन इच्छा सब कामना, पूरई गंगाराम||

|| इति शुभम् भूयात् ||

श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन चालीसा

।। दोहा ।।

सृष्टि लय पालन करे, अविनाशी सुख धाम।

अखिल विश्व चेतन करे , बाबा गंगाराम ।।

देवकीनन्दन करि कृपा, अपनाओ निज दास।

भक्ति भाव उर में भरो, देवो बुद्धि प्रकाश ।।

।।चौपाई।।

जय जय भक्त शिरोमणि नामा, गंगाराम सुवन सुख धामा ।।1।।

धन्य सो नगर जहां पे जाये , देवकीनन्दन नाम सुहाये ।।2।।

धन्य पितुहि जिन्ह पालन कीन्हा, जगती ले भक्ति वर दीन्हा ।।3।।

धन्य गायत्री प्रिया प्रवीणा ,जिन पति संग भक्ति रस लीन्हा ।।4।।

पुनि पुनि धन्यहि सन्तति सारी, संयमी, सुशील कठिन व्रत धारी ।।5।।

वैश्य वंश जस ध्वजा फराई , घर घर बाबा ज्योति जलाई ।।6।।

सौम्य स्वभाव, विमल, वैरागी, गंगाराम चरण अनुरागी ।।7।।

सबहि मान प्रिय आप अमानी, सहज सही सब कुजन कुबानी ।।8।।

निष्ठावान, निपुण, नय नागर, मोह निशा के लिये दिवाकर ।।9।।

प्रभु आज्ञा सपनेहुं मन मानी, मन्दिर बनवाने की ठानी ||10||

निज बन्धु खोदी मग खाई ,मन महुं त्रास तनिक नहिं लाई ||11||

पामर जन बहु बात बनाई, मारे तीर विष वचन बुझाई ||12||

गंगाराम जेहि जनहि निहारे, कोटि कुटिल क्या करहि बिचारे ||13||

मन सब भांति भयेउ अशंका, बजा दिया जग जीत का डंका ||14||

भागीरथ जस गंगा आनी, तेहि करणी कीन्ही बड़ज्ञानी ||15||

आये सकल देव समुदाई, विश्वकर्मा ने नींव धराई ||16||

बन्यो शीघ्र झुंझुनूं मंह धामा, पंचदेव मन्दिर अभिरामा ||17||

सह परिजन तंह डेरा कीन्हा, दुर्जन दुराभाव जब चिन्हा ||18||

देव हेतु तनु मनु धनु त्यागा, अविरल भक्ति का वर मांगा ||19||

प्रभु प्रसाद कर सब धन बांट्यो,जन जन को सब संकट काट्यो||20||

एकहि व्रत और एकहि नेमा, पावन नाम जो रटहि सप्रेमा ||21||

जग हित नित संकट सहे भारी, मान अमान व रोष बिसारी ||22||

जीवन सकल कियो संग्रामा, संतति सम्बल प्रेरक वामा ||23||

निज निर्वाणहि अवसर जानी, उर पीड़ा निज मुखहि बखानी ||24||

कलि कलेष द्वन्द चहुं ओरा, दो पग रखने को नहीं ठोरा ||25||

निश्चय रूप भगत वर बानी, समुझि सकी नहीं बुद्धि अयानी ||26||

मुख ते गंगाराम उचारे, तनहि त्यागि प्रभु धाम सिधारे ||27||

महिमा एको न जानन पाई, ज्योति ज्योति के मांहि समाई ।।28।।

चढ़हि चिता बहु रूप बनायो, भक्तिहि सत्य प्रमाण दिखायो ।।29।।

गायत्री ने विनती कीन्हीं, सूर्यदेव निज साखी दीन्हीं ।।30।।

चमत्कार पावक मंह कीन्हा, भुजा उठा जग आशीष दीन्हा ।।31।।

असुरन हेतु खड़ग समानू, मुनि मन कमल हेतु जनु भानू ।।32।।

शीश प्रकट भई सुरसरि धारा, पल में पुनित किये जग सारा ।।33।।

बालरूप तब आपहिं धरहिं, सुरन सबहि मिल जय धुनि करहिं ।।34।।

जड़ चेतन, चेतन जड़ होई, चित्र लिखित से भये सब कोई ।।35।।

शारद शेष सकहि नहीं बरणी, देवकीनन्दन करि जस करणी ।।36।।

गंगाराम भजन जहं होहहिं, भक्त शिरोमणि अवश्यहि सोहहिं ।।37।।

देवकीनन्दन के अवराधे, बाबा कारज सकलहि साधे ।।38।।

जो नित यह चालीसा गावे, कामहि कटे भक्ति उर आवे ।।39।।

देवकीनन्दन पद चित लावे, जग सुख भोग अमर पद पावे ।।40।।

दोहा.- मम मन माया में बन्ध्यो, चित दौड़े चहुं ओर ।

अब तो भक्त शिरोमणि, निज चरणन दो ठौर ।।

जग के बन्धन काटकर, मेटो मम संताप ।

बाबा गंगाराम सहित, हृदय विराजो आप ।

।। इति शुभम् भूयात् ।।

शक्ति स्वरूपा देवी गायत्री चालीसा

|| दोहा ||

सत्य धर्म तप पुञ्ज हैं, बाबा गंगाराम |

कलियुग में लीला करी, अदभुत और अभिराम ||

देवकीनंदन- गायत्री, लीला के आधार |

गायत्री के चरित को, प्रणवहुं बारम्बार ||

|| चौपाई ||

नमो-नमो गायत्री माता, सकल सुमंगल सुख की दाता || 1 ||

गंगा सी हे सत्य साधिका, गंगाराम की तुम अराधिका || 2 ||

आश्विन शुक्ला एकम् आई, प्रगटी तू सृष्टि हर्षाई || 3 ||

ज्ञान, भक्ति, करुणा की सागर, महिमा जग में हुई उजागर || 4 ||

विष्णु रूप तेरे मन भायो, बाल्यकाल में दर्शन पायो || 5 ||

निज छवि गंगाराम दिखाये, सुन्दर मधुरम् वचन सुनाये || 6 ||

देवकीनंदन अंश हमारो, भार्या बनकर तेज सम्भारो || 7 ||

त्याग, भक्ति की लीला होगी, जग को सत्य ज्ञान तुम दोगी || 8 ||

देवकीनंदन को परणाई, तू शिव की शक्ति सम आई || 9 ||

त्याग, तपस्या की तू मूरत, सौम्य सलोनी तेरी सूरत || 10 ||

लीला तेरी जाय न वरणी, छः संतन की माँ तू जननी || 11 ||

संतति ने त्यागा सुख सारा, ब्रम्हचर्य जीवन में धारा || 12 ||

धन्य- धन्य गायत्री माता, त्यागमूर्ति तू है जगमाता || 13 ||

लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती रूपा, पाया तुमने रूप अनूपा || 14 ||

तीनों शक्ति तुझमें समाई, सारे जग ने महिमा गाई || 15 ||

ज्ञान मूर्ति हे योग धारिणी, सत्य स्वरूपा, तपोधारिणी || 16 ||

स्नेह हाथ जिनके सिर फेरा, जीवन में हुआ नया सवेरा|| 17 ||

पति के संग में वचन निभायो, पंचदेव को धाम बनायो || 18 ||

तीनों लोकों में जस छाया, कुटिल जनों को ये न भाया || 19 ||

निजजन बंधु बने पराये, ताप- त्रास बहुँ भांति दिखाये || 20 ||

धन-वैभव-सुख पल में छोड़ा, जग के नातों को भी तोड़ा || 21 ||

धर्म राह पे कष्ट उठाये, तेरी पीड़ा कौन बताये || 22 ||

पंचदेव झुंझनूं का प्रांगन, बना तुम्हारे तप का आँगन || 23 ||

सत्य परीक्षा की घड़ी आई, भक्ति की शक्ति दिखलाई || 24 ||

देवकीनंदन धाम सिधारे, चिता की ज्वाला तन को जारे || 25 ||

द्रौपदी भांति हाथ उठाकर, करुणा वचन उचारे जाकर || 26 ||

सूर्यदेव दो आज गवाही, बाबा दिखलादो सकलाई || 27 ||

निश्चल तन तब हाथ उठायो, वर देतो जग में लहरायो || 28 ||

शीश से गंगा नीर बहाया, बालरूप जग को दर्शाया || 29 ||

सुर-नर-मुनि जन ने जस गाया, सती के सत् को शीश नवाया || 30 ||

अनुसुईया, सीता, सावित्री, कलियुग में माता गायत्री || 31 ||

बाबा ने अभिनन्दन कीन्हा, निज चरणों में आसन दीन्हा || 32 ||

मंदिर बना धाम के माही, जॉकी शोभा वरणी न जाही || 33 ||

आशीर्वाद मंदिर में राजे, मानों शिव संग शक्ति साजे || 34 ||

गायत्री संग देवकीनंदन, युगल छवि को सबका वंदन || 35 ||

लक्ष्मी रूप सकल मन भावे, सुख सम्पति घर में बरसावे || 36 ||

शक्ति स्वरूपा संकट हरती, निज भक्तों की रक्षा करती || 37 ||

मंत्र जाप जो करता तेरा, मिट जाता भव बंधन फेरा|| 38 ||

जो भी तुमको निशदिन ध्याये, सकल मनोरथ पूरण पाये|| 39 ||

जयति-जयति जगजननी अम्बा, हरो कष्ट माँ तुम अवलम्बा || 40 ||

|| दोहा ||

दुर्गा रूप प्रकाशिनी, महिमा अगम अपार |

माँ गायत्री करो कृपा, गुण गाये संसार ||

शत-शत वंदन माँ तुम्हें, धरें चरण में माथ |

देवकीनंदन के सहित, सिर पर राखो हाथ ||

|| इति शुभम् भूयात् ||

आरती श्री बाबा गंगाराम की

जय श्री गंगाराम, बाबा जय श्री गंगाराम ।
नारायण अवतारी, सत् चित् आनन्द धाम ।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

सत्य स्वरूप सनातन , नित लीला धारी ।
कलिमल तिमिर निवारक, जग पालनहारी ।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

तुम बैकुण्ठ विहारी, अगणित गुणराशी ।
झुंझुनूं धाम निवासी, घट घट के वासी ।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

श्वेतवर्ण पीताम्बर , वनमाला धारी ।
कोटि सूर्य सम शोभा, दर्शन शुभकारी ।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

देवकीनन्दन को प्रभु, स्वप्न में दरश दियो ।
पावन धाम बनाकर, जग कल्याण कियो ।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

पंचदेव मन्दिर में, राजत है ज्योति ।
भक्तों की मन वांच्छा, जहं पूरण होती ।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

हम अति दीन अकिंचन, दया दृष्टि कीजै ।
कृपा करो करूणामय, चरण शरण लीजै ।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

गंगाराम प्रभु की , आरती जो गावे ।
भुक्ति मुक्ति, धन सम्पद, अतिशय सुख पावे।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

आरती भक्त शिरोमणि देवकीनंदन
एवं शक्ति स्वरूपा देवी गायत्री की

ॐ जय देवकीनंदन, स्वामी जय देवकीनंदन,
जय जय माँ गायत्री, दोनों को वंदन।
ॐ जय देवकीनंदन - ॐ गायत्री वंदन

गंगाराम प्रभु की, महिमा दर्शाई,
कलियुग में भक्ति की, शक्ति दिखलाई।
ॐ जय देवकीनंदन - ॐ गायत्री वंदन

गायत्री और देवकी, जग से न्यारे हैं,
भक्ति मार्ग प्रदर्शक, ये ध्रुव तारे हैं।
ॐ जय देवकीनंदन - ॐ गायत्री वंदन

देवकीनंदन ने जब, सत्य को अपनाया,
हरिश्चंद्र सम सब कुछ, त्याग के दोहराया।
ॐ जय देवकीनंदन - ॐ गायत्री वंदन

द्रौपदी ने टेरा था, केशव को जैसे,
गायत्री ने प्रभु से, विनती की वैसे।
ॐ जय देवकीनंदन - ॐ गायत्री वंदन

चिता में शीश से निकली, जब जल की धारा,
आशीर्वाद दिया तब, स्तब्ध जगत सारा।
ॐ जय देवकीनंदन - ॐ गायत्री वंदन

आशीर्वाद मंदिर में, दोनों हैं शोभित,
शिव शक्ति सम मूरत, मन होवे मोहित।
ॐ जय देवकीनंदन - ॐ गायत्री वंदन

युगल रूप की आरती, जो मन से गावे,
भक्ति भाव मन उमड़े, सुख संपति पावे।
ॐ जय देवकीनंदन - ॐ गायत्री वंदन